Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

शोध की सामाजिक भूमिका

मधुमिता ओझा
शोधार्थी, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय,
कोलकाता,भारत।

सारांश– शोधकार्य से किसी भी समाज या राष्ट्र की प्रगति तय होती है अर्थात् किसी भी राष्ट्र की प्रगति वहां की शोध प्रगति पर निर्भर होती है । शोध एक मजबूत बुनियादी ढांचा तैयार करने एवं राष्ट्र को निरंतर विकसित होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । शोध न केवल बेहतर तरीके से सीखने का तरीका सीखाता है, बल्कि नए तरीके भी इज़ाद करता है ।

मुख्य शब्द– शोध, सामाजिक, समाज, राष्ट्र, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक।

व्यक्ति का समाज से, समाज का राष्ट्र से और राष्ट्र का विकास से गहरा सम्बन्ध होता है । किसी भी राष्ट्र का विकास वहां की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति पर निर्भर करता है । सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न कारक प्रभावित करते हैं । सभी कारकों की चर्चा न करते हुए मैं उस महत्वपूर्ण कारक की चर्चा करना चाहूंगी जिसके निरंतर और नवीन प्रगति से समाज और राष्ट्र के उन्नति का सम्बन्ध होता है । समाज तथा राष्ट्र की उन्नति की पहचान बेहतर शोध परिणामों द्वारा होती है । आज के वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में शैक्षिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र में शोध का अत्यंत महत्व है ।

जिसे अंग्रेजी में रिसर्च तथा हिंदी में अनुसंधान अथवा शोध कहते है वह अपनी प्रकृति में नवाचार को तथा प्रवृति में खोज को समेटे रहता है । वैज्ञानिक क्षेत्र और राष्ट्रीय पहलुओं पर की जा रही शोध पद्धतियां भिन्न-भिन्न होती है । यह ज्ञान के सृजन का उपकरण है । ज्ञान वृद्धि के साथ ही साथ इसमें राष्ट्र का विकास तथा कल्याण भी समाहित होता है । यह तमाम जटिल मुद्दों को सुलझाने तथा सार्वजनिक जागरूकता वृद्धि में सहायक है । प्रमाण इसका साधन है जिसकी सहायता से असत्य को बेपर्दा और सत्य को स्थापित करता है । राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु क्रमबद्ध एवं सुनियोजित प्रक्रिया को आधार बनाकर शोध किया जाता है ।

निश्चित समस्या हेतु निश्चित प्रणाली का उपयोग आवश्यक होता है। इसका मुख्य उद्देश्य किसी अध्ययन तथा क्षेत्र में ज्ञान के विकास से है।

विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन शोध के बीज हैं। यह अभ्यास और प्रयोग की मांग करता है। इसने सदैव मनुष्य को आगे बढ़ाने का काम किया है। कल हम क्या थे और कहाँ थे तथा आज हम क्या है और कहाँ है के बीच के फासलों से रूबरू कराता है शोध। यह इतिहास को जानने का माध्यम है और भविष्य को गढ़ने का साधन भी। इसके दशकों ने विज्ञान, प्रोद्योगिकी, साहित्य और समाज में निरंतर हो रहे परिवर्तनों और नवाचार ने हमें वहां पहुँचाया जहाँ आज हैं: आगे बढ़ने के लिए ज्ञान और उपकरणों के साथ एक सभ्य और प्रगतिशील समाज। अनुसंधान के बगैर हम यह नहीं जान पाते कि टेलीफ़ोन के बाद मोबाइल का भी आविष्कार संभव है, हम नहीं जान पाते की ट्रेन के साथ ही साथ विमान की यात्रा भी संभव है, हम नहीं अवगत होते सांस्कृतिक अवदान से, कोसों दूर होकर भी नहीं जुड़ पाते एक दूसरे से, साहित्य की उन कड़ियों से साक्षात्कार नहीं हो पाता जिन्होंने मानवतावाद जैसे विचारधारा का पाठ पढ़ाया। शोध के बिना, यह संभव नहीं है।

सृजनात्मक ज्ञान और तकनीकि विकास का सम्बन्ध राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति से जुड़ा हुआ है। ज्ञान का सृजनात्मक निर्माण उच्च गुणवत्ता वाले शोध पर निर्भर करता है। इस दिशा में विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों की अहम् भूमिका है, जिनके पास राष्ट्र के कुछ बेहतरीन मष्तिष्क हैं। इस तरह उनका दायित्त्व भी बढ़ जाता है। विश्वविद्यालयों को उच्च कुशल एवं राष्ट्र के समुचित विकास की खोज में नेतृत्व की भूमिका निभानी चाहिए।

इस बात पर विचार करना जरुरी है कि वे कौन सी नवीन पद्धतियां व प्रयोग होंगे जिनको अपनाकर भविष्य में विश्वविद्यालय व शोध संस्थान उत्कृष्ट शोध प्रदान करने की दिशा में अग्रसर होंगे। शोध संस्थानों का उत्तरदायित्व शोधार्थियों की आवश्यकताओं के प्रति भी है। जिससे वे अपने लक्ष्य को एकाग्रता के साथ पूरा कर सके।

शोध वैज्ञानिक चेतना से जुड़ा है। इसका स्वरुप वस्तुनिष्ठ होता है। आज जितने भी उन्नतशील देश है उनके प्रगति का श्रेय वहां के प्रयोगशील और विकासशील अनुसंधान केन्द्रों को जाता है। शोध राष्ट्र के विकास के साथ ही साथ पूरे विश्व के मार्गदर्शन का काम करता है। प्रत्येक विषय और समस्या की बारीकियों का गहन विश्लेषण करता है। जो राष्ट्र शिक्षा और शोध से जितना दूर होता है वह अंधविश्वास के उतने ही करीब होता है। जिस देश का शोध कार्य जितना समृद्ध होगा वह देश उतना ही संवेदनशील, विकासशील और शक्तिशाली होगा। शोध वैश्विक आवश्यकता एवं राष्ट्रीय विकास में सहायक है।

अभी भी ऐसे कई तथ्य व मानवीय जीवन से जुड़ी कितनी ही जटिलताएं है जिन्हें खोजा जाना बाकी है: बीमारियों का टिका, विज्ञान से जुड़े नवीन खोज, प्रजातियों की खोज और मानवीय संबंधों के कई राज़। यह शोध से ही संभव है। उदाहरणस्वरुप दुनिया के लगभग 200 देशों में फैली कोविड-19 जैसी महामारी को रोकने के लिए कई देशों में वैक्सीन बनाने को लेकर शोध हो रहे हैं। यह कई तरह से मनुष्य, समाज, और राष्ट्र की मदद करता है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि शोध समाज की प्रगति और विकास में मदद करता है।

निष्कर्ष : अतः शोधकार्य से किसी भी समाज या राष्ट्र की प्रगति तय होती है अर्थात् किसी भी राष्ट्र की प्रगति वहां की शोध प्रगति पर निर्भर होती है। शोध एक मजबूत बुनियादी ढांचा तैयार करने एवं राष्ट्र को निरंतर विकसित होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शोध न केवल बेहतर तरीके से सीखने का तरीका सीखाता है, बल्कि नए तरीके भी इज़ाद करता है।

संदर्भ-ग्रन्थ

1. Journal of Economics Bibliography, Volume 2, Issue 3, September 2015.
2. वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा, रिसर्च मैथडोलोजी, दसवा संस्करण- 2017, पंचशील प्रकाशन
3. Educational Research MES16, GPH Panel of Experts, Gullybaba Publishing House, 2015
4. हरिकृष्ण रावत, सामाजिक शोध की विधियाँ, रावत प्रकाशन, 2013
5. डॉ. विनयमोहन शर्मा, शोध प्रविधि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973
6. राम आहूजा, सामाजिक अनुसंधान, रावत प्रकाशन
7. डॉ. सावित्री सिन्हा (संपादिका), अनुसंधान का स्वरुप, हिंदी अनुसंधान परिषद् ग्रंथमाला, ग्रन्थ 3, आत्माराम एंड संस प्रकाशन, 1954.